तर्ज--लागी जिसकी वही ये दुख जाने

लागी वाली कुछ और न देखे,
पिया में दिन रैन रहे
पिया रस मे मगन भई,
ना कुछ मुख थें कहे
1--इक अग्नि तेरे विरह की,
दूजी इश्क की होए
जब लग न तोहे देखूं प्रीतम,
चैन नाही मोहे
2--विरह जाने विरहनी,,
जो मिल के बिछुरी होए
ज्यों मीन बिछरी होए जल थें,
या गत जाने सोए
3--आशिक प्यारी पिउ की ,
ना जाने वाको कोए
ना ऊपर देखावहीँ,
यों आशिक छिपी रोए

Nijanand App